ISSN : 2394-3580

VOLUME - 5 No. : 11 Sep. - 2018

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Research Journal SRF Book Publication

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor - 3.9

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	ब्रिटिश कालीन जबलपुर जिला	कृष्ण कुमार नागवंशी	1-6
2	शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में आचार्य विद्यासागर महाराज के विचारों का अध्ययन करना (मध्यप्रदेश के संदर्भ में)	सुदेश बाला जैन	7-10
3	भारत में प्रमुख दूरसंचार सेवा प्रदाता	अंकिता पाण्डेय	11-12
4	महाभारत में धर्म के स्वरूप का निरूपण एवं धर्म के विभाग	डॉ. सुनील कुमार मिश्र	13-23
5	राजपूत युग में सामाजिक समरस्ता	स्वाती दुबे	24-28
6	उच्च शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार व गुणवत्ता उन्नयन की चुनौतियाँ व संभावनायें (मध्यप्रदेश के संदर्भ में)	डॉ. मनीषा शर्मा	29-30
7	भूआकृति विज्ञान, पर्यावरण और समाज जल संग्रहण प्रबन्धन	डॉ. कृष्ण कान्त मिश्र	31-38
8	वर्तमान संदर्भ में उच्च शिक्षा वाणिज्य विषय के साथ में विभिन्न वैकल्पिक विषय में रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाएँ (जबलपुर जिले के महाविद्यालयों के विशेष संदर्भ में)	श्रीमती भारती रजक	39-42
9	राज्यों में राष्ट्रपति शासन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	अभिलाषा ठाकुर	43-49
10	भारत में समावेशी शिक्षा का परिप्रेक्ष्य : अवरोध, समाधान एवं मूल्यांकन की उपादेयता	अपर्णा श्रीवास्तव	50-53
11	समावेशी शिक्षा : माता–पिता व शिक्षक की भूमिका	डॉ. शकीला खान	54-58
12	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के एककीकरण का सेन्ट्रल मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक के निष्पादन पर प्रभाव	श्रीमती सोनिया अरोरा डॉ. राजकुमार गौतम	59-60
13	**Impact study of PESA Hamara Haq in Gaurella Block**	**Dr A. K. Gill, Reader Binod Kumar Toppo**	61-62
14	भारत में बीमा विनियामकों का क्रमिक विकास	योगेश आशर डॉ. अजय प्रकाश श्रीवास्तव	63-65
15	मध्यप्रदेश के क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. पुष्पा रमेश विनोद रूंघे	66-73
16	किशोर विद्यार्थियों के समायोजन एवं आत्मबोध पर अवसादी अभिभावकों के प्रभावों का अध्ययन	डॉ. बलिदान जैन श्रीमती मधुबाला शर्मा	74-77
17	संवेगात्मक बुद्धि : सिद्धान्त एवं व्यवहार	डॉ0 चन्द्रकान्ता जैन रामाकान्त	78-83

संवेगात्मक बुद्धि : सिद्धान्त एवं व्यवहार

डॉ0 चन्द्रकान्ता जैन
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म0प्र0)
रामाकान्त
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म0प्र0)

सारांश (Abstract) **:-** शिक्षा किसी भी समाज का आधार है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। संवेगात्मक विकास मानव वृद्धि और विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। समाज में विशेष रूप से किशोरावस्था में हिंसा, अनैतिकता और अन्य बुराइयों के बढ़ते उदाहरणों को रोकने के लिए शिक्षा प्रणाली में मौलिक परिवर्तन करने की आवश्यकता पर बल देना चाहिए। इसे अपने वास्तविक उद्देश्यों की सेवा करने के लिए, अधिक संतुलित बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जान चाहिए। संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य उसकी उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उसकी सहायता करती है। किस में कितनी संवेगात्मक बुद्धि है उसके इस स्तर की माप के लिए जिस इकाई विशेष का प्रयोग करते है। उसे संवेगात्मक लब्धि (EQ) कहा जाता है। यह उसी प्रकार का पैमाना है जिस प्रकार बुद्धि–लब्धि (IQ) से सामान्य बुद्धि की स्तर की माप की जाती है।

मुख्य शब्द : शिक्षा, विकास, संवेग एवं संवेगात्मक बुद्धि।

प्रस्तावना (INTRODUCTION) **:-** शिक्षा किसी भी समाज का आधार है, जिसका लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। ताकि व्यक्ति समाज के योग्य बन सके। व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हमें निम्न रूपों में दिखाई पड़ता है जैसे शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं चारित्रिक विकास आदि। संवेगात्मक विकास मानव वृद्धि और विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। **महात्मा गाँधी** ने सही ही कहा है कि, ''शिक्षा बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का सम्पूर्ण विकास है।'' लेकिन हमारी शिक्षा प्रणाली अभी भी किताबी ज्ञान पर केन्द्रित है। यह केवल संज्ञानात्मक पक्ष पर अधिक केन्द्रित है, भावनात्मक और क्रियात्मक पक्ष को लगभग नजर अंदाज करती है। प्रायः इस अपूर्ण या एकांगी विकास का परिणाम यह होता है, की व्यक्ति के व्यवहार में असंतुलन पैदा होना, जो अपने व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन के साथ प्रभावी ढंग से व्यवहार नही कर पाता। समाज में विशेष रूप से किशोरावस्था में हिंसा, अनैतिकता और अन्य बुराइयों के बढ़ते उदाहरणों को रोकने के लिए शिक्षा प्रणाली में मौलिक परिवर्तन करने की आवश्यकता पर बल देना चाहिए। इसे अपने वास्तविक उद्देश्यों की सेवा करने के लिए, अधिक संतुलित बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जान चाहिए। इस प्रकार आज शिक्षा प्रणाली के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है, की इसे व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्षों से निपटने के लिए तैयार किया जाए, ताकि व्यक्ति में स्वयं के साथ–साथ दूसरों के लिए सम्मान विकसित हो सके।

हमारी औपचारिक शिक्षा प्रणाली ''जानने के लिए सीखना'' और ''करके सीखना'' के न्यूनतम विस्तार पर जोर देती है (शर्मा, 2005)। उसके स्थान पर ''एक साथ रहने के लिए सीखना'' और ''व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए सीखना'' पर जोर देना चाहिए। शिक्षा निर्विवाद रूप से मूल्य, अभिवृत्ति, व्यवहार और कौशल को आकर देने का प्रभावी साधन है, जो मनुष्य को पूरे विश्व और मानवता के दीर्घकालीन हितों के कार्य करने के लिए तैयार करती है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के युग में शैक्षणिक प्रणाली के समक्ष वास्तविक चुनौती, ऐसे मानव संसाधन के निर्माण की है, जो नये अवसरों का लाभ उठा सके। इसके लिए शिक्षा प्रणाली को वर्तमान में हो रहे परिवर्तन में समायोजित होने के लिए गतिशील होना चाहिए।

स्वतंत्रता के पश्चात् "बुनियादी शिक्षा" (नई तालीम, महात्मा गाँधी के शब्दों में) शुरू करने की प्राथमिकता दी गयी। जिसका मुख्य उद्देश्य था, की बालक की शिक्षा का प्रारम्भ उसे एक उपयोगी

हस्त–शिल्प सिखाकर उसे उत्पादन करने के योग्य बनाया जाये। माध्यमिक और उच्च शिक्षा की उपयुक्त कार्य प्रणाली और संरचना के लिए भारत सरकार ने क्रमशः 1948, 1952 और 1964 में तीन आयोगों का गठन किया। हालाँकि इन आयोगों की सिफारिशों के परिणामस्वरूप काफी कुछ सुधार हुए। कोठारी आयोग (1964–66) की सिफारिशों के आधार पर भारत सरकार ने 1968 में शिक्षा की राष्ट्रीय नीति की घोषणा की। इस आयोग ने अपने सिफारिश में कहा कि शिक्षा को मानव जीवन के निकट लाने के लिए शिक्षा प्रणाली का रूपांतरण, शैक्षिक अवसरों के विस्तार के लिए लगातार प्रयत्न, सभी स्तरों पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए व्यापक प्रयास, विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा के विकास पर विशेष बल तथा नैतिक व सामाजिक मूल्यों के निर्माण पर बल को पुनर्निर्माण की सिफारिश की।

संवेगात्मकता की अवधारणा (CONCEPT OF EMOTIONALITY) **:- संवेग** शब्द अंग्रेजी के इमोशन (Emotion) शब्द का हिंदी रूपान्तर है। इस शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द इमोवेयर (Emovere) से मानी जाती है। जिसका शाब्दिक अर्थ है–उत्तेजित करना (to excite)। इस प्रकार संवेग को व्यक्ति की उत्तेजित दशा (stirred up state) कहते है। इसी अर्थ में गेल्डार्ड ने कहा है ''संवेग क्रियाओ का उत्तेजक है।'' चार्ल्स जी. मोरिस ने संवेग की परिभाषा देते हुए लिखा है की ''संवेग एक ऐसी भावात्मक अनुभूति है, जिसमें आंतरिक रूप व्यक्ति को शारीरिक परिवर्तनों से गुजरना पड़ता है तथा जिसकी वाह्य अभिव्यक्ति विशेष व्यवहार प्रतिमानों या लक्षणों के रूप में होती है।''

संवेगात्मक बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषा (MEANING AND DEFINITION OF EMOTIONAL INTELLIGENCE) **:–** किसी की संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य उसकी उस समग्र क्षमता से है जो उसे उसकी विचार प्रक्रिया का उपयोग करते हुए अपने तथा दूसरों के संवेगों को जानने, समझने तथा उनका सर्वोत्तम प्रबन्धन करने में उसकी सहायता करती है। किस में कितनी संवेगात्मक बुद्धि है उसके इस स्तर की माप के लिए जिस इकाई विशेष का प्रयोग करते है। उसे संवेगात्मक लब्धि (EQ) कहा जाता है। यह उसी प्रकार का पैमाना है जिस प्रकार बुद्धि–लब्धि (IQ) से सामान्य बुद्धि की स्तर की माप की जाती है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अवलोकन किया जाये तो संवेगात्मक बुद्धि पद का प्रयोग 1990 में सबसे पहले दो अमेरिकी प्रोफेसरों **डॉ. जॉन मेयर** तथा **पोटर सेलोवे** द्वारा एक ऐसा वैज्ञानिक प्रमाप तैयार करने हेतु किया गया था जिससे लोगों की संवेगात्मक क्षेत्र में विद्यमान वैयक्तिक योग्यताओं में विभेदीकरण किया जा सके। परन्तु इसकी वैज्ञानिक एवं सैद्धान्तिक व्याख्या का श्रेय दि न्यू टाइम्स के पत्रकार से मनोवैज्ञानिक बने **डेनियल गोलमैन** को जाता है। इन्होंने ने अपनी पुस्तक ''संवेगात्मक बुद्धि : बुद्धि लब्धि से अधिक महत्वपूर्ण क्यों'' (Emotional Intelligence: Why it can matter than I.Q.) के माध्यम से इसे विशेष चर्चा का विषय बनाया।

मेयर एवं **सेलोव** ने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करतें हुए कहा है कि ''संवेगों को प्रत्यक्षण करने की क्षमता, संवेगों के प्रति पहुँच बनाने एवं उसे उत्पन करने कि क्षमता ताकि चिन्तन में मदद हो सके तथा संवेग एवं संवेगात्मक ज्ञान को समझा जा सके तथा संवेग को चिंतनशील ढंग से नियमित किया जा सके ताकि संवेगात्मक एवं बौद्धिक वर्द्धन को उन्नत बनाया जा सके, से होता है।''

बार–ऑन ने संवेगात्मक बुद्धि की परिभाषा करते हुए कहा है कि ''संवेगात्मक बुद्धि द्वारा वह क्षमता परिवर्तित होती है जिसके माध्यम से दिन प्रतिदिन के पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ निपटा जाता है और जो व्यक्ति की जिन्दगी में जिसमें पेशेवर तथा व्यक्तिगत धन्धा भी सम्मिलित हैं सफलता प्राप्त करने में मदद करता है।''

डेनियल गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''संवेगात्मक बुद्धि खुद को अभिप्रेरित करने के लिए स्वयं एवं दूसरों के भावनाओं को पहचानने की क्षमता, ताकि हमारे अंदर और हमारे रिश्तों में भावनाओं का बेहतर प्रबन्धन हो सके।'' संवेगात्मक बुद्धि उन क्षमताओं की व्याख्या करता है जो बुद्धि लब्धि द्वारा मापी जाने वाली शैक्षिक बुद्धिमत्ता या विशुद्ध रूप से ज्ञानात्मक क्षमताओं से अलग होते हुए भी उनकी अनुपूरक। उन्होंने एक संवेगात्मक योग्यताओं की एक श्रेणी भी चिन्हित की है जो व्यक्तियों को एक दूसरे से पृथक करती है। इन योग्यताओं के निम्नलिखित चार समूह है :–

1. आत्म जागरूकता इसमें अपने संवेगों की शक्तियों एवं कमजोरियों को समझने की क्षमता सम्मिलित होती है।
2. आत्म प्रबंधन इसमें अपने अभिप्रेरणों का प्रबंन्धित करने तथा व्यवहारों नियंत्रित करने की क्षमता सम्मिलित होती है।
3. सामाजिक जागरूकता इसमें दूसरे लोग क्या कह रहे हैं या अनुभव कर रहे हैं और क्यों कर रहें है और ऐसा क्यों अनुभव कर रहे है को समझने की क्षमता सम्मिलित होती है।
4. सामाजिक कौशल इसमें इस ढ़ग से व्यवहार करने की क्षमता सम्मिलित होती है जिसके माध्यम से व्यक्ति दूसरों से वांछित परिणाम प्राप्त करने में सफल होता है और इस तरह वह व्यक्तिगत लक्ष्यों को प्राप्त कर लेता है।

सामान्यतः यह समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता एवं उपलब्धियाँ उसकी बुद्धि–लब्धि पर आधारित होती है। जिसकी बुद्धि–लब्धि अधिक होती है, सामान्यतः उसके जिन्दगी की उपलब्धियाँ भी अधिक होती है। परन्तु हालिया शोधों से यह स्पष्ट हो गया है कि व्यक्ति को अपनी जिन्दगी में जो सफलता प्राप्त होती है उसका मात्र 20% ही बुद्धि लब्धि के कारण होता है 80% सफलता संवेगात्मक बुद्धि के कारण होता है।

संवेगात्मक बुद्धि के तत्व (COMPONENTS OF EMOTIONAL INTELLIGENCE) **:-** संवेगात्मक बुद्धि के तत्वों को मूलतः दो भागों में बाँटा गया है : वैयक्तिक तत्व तथा अन्तर वैयक्तिक तत्व।

1. वैयक्तिक तत्व (Personal component) **:–** संवेगात्मक बुद्धि का आधार आत्मज्ञान होता है। इसमें व्यक्ति अपने भावनाओं से अवगत होता है साथ ही साथ इसमें वह दूसरों के भावनाओं को प्रबंधित भी करता है तथा इसमें आत्म अभिप्रेरणा भी सम्मिलित होता है। अतः संवेगात्मक बुद्धि के तीन तत्व बतलाये गये है जो इस प्रकार है :–

(I) **अपने भावनाओं से अवगत होना** – व्यक्ति अपने भावों एवं संवेगों से जिस रूप में उत्पन्न होता है उससे अवगत होता है।

(II) **अपने भावनाओं को प्रबंधित करना** – भावनाओं को प्रबंधित करने से तात्पर्य यह नहीं होता है कि भावनाओं को दबा कर रखा जाय बल्कि इससे तात्पर्य यह होता है कि उन भावनाओं को उचित ढ़ग से अभिव्यक्त किया जाय और नियंत्रण से बाहर न होने दें। जिन व्यक्तियों में संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है वे यह भी जानते हैं कि अपनी मनोदशा का नियमन कैसे किया और अपने क्रोध, विषाद आदि से अपनी जिन्दगी को प्रभावित नहीं होने देते है।

(III) **आत्म अभिप्रेरणा** – आत्म अभिप्रेरणा से तात्पर्य ऐसे सांवेगिक आत्म नियंत्रण से होता है जो व्यक्ति को उत्तम लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रखता है, कुंठित होने पर भी व्यक्ति को कार्यरत रखता है।

2. अन्तर्वैयक्तिक तत्व (Interpersonal components) **:-** संवेगात्मक बुद्धि के अन्तर्वैयक्तिक तत्व में दूसरों के संवेगों का समझना तथा उसके प्रति संवेदनशीलता दिखाना और संवेगों को उचित ढ़ग से संचालित करना आदि सम्मिलित होता है। इस श्रेणी के निम्नांकित दो तत्व प्रधान है।

(I) **परानुभूति** – दूसरों की संवेगों की पहचान करना जिसमें व्यक्ति दूसरों के अभिप्रेरणा एवं संवेगों को समझता है और उनकी पर्याप्त पहचान करता है।

(II) **संवेगों का संचालन करना**– दूसरों के साथ उत्तम सम्बन्ध बनाये रखना एवं उसे ठीक ढंग से संचालित करके रखना एक ऐसा तत्व है जो अन्य तत्वों अर्थात् अपने संवेगों को प्रबन्धित करके रखने की क्षमता तथा परानुभूति का परिणाम होता है।

राइस, डी. एम. (2007) द्वारा ''एन इक्जामिनेशन ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस : इट्स रिलेशनशिप टू एकेडमिक अचीवमेंट इन आर्मी जे.आर.ओ.टी.सी. एंड द इम्पिलीकेशन फार एजुकेशन'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्धों को ज्ञात करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध है, तथा उच्च संवेगात्मक बुद्धि के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई।

ब्रेहमैन एण्ड बारचर्ड (2007) द्वारा ''इमोशनल इंटेलीजेंस, कम्पेयरिंग साइंस एण्ड आर्ट्स स्टूडेन्ट्स'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य विज्ञान और कला विषय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, कला के विद्यार्थियो की तुलना में उच्च पाई गई।

तोमर, ऋचा (2010) द्वारा ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और समस्या समाधान योग्यता के प्रभाव के बीच सम्बन्धों की जॉच की गई थी। शोध अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और समस्या समाधान योग्यता के बीच अधिक सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया।

गुप्ता, गरिमा एण्ड सुशील कुमार (2010) द्वारा ''मेन्टल हेल्थ इन रिलेशन टू इमोशनल इन्टेलीजेंस एण्ड सेल्फ एफीकेसी अमंग कालेज स्टूडेन्ट'' विषय पर शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य कालेज विद्यार्थियो की स्वयं की प्रभावकारिता और संवेगात्मक बुद्धि से मानसिक स्वास्थ्य के बीच सम्बन्धो का पता लगाने के लिए किया गया है। इसके लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के 200 (100 स्त्री और 100 पुरुष) कला और विज्ञान के विषय के विद्यार्थियो पर परीक्षण किया गया। शोधकर्ताओ ने निष्कर्ष में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि और स्वयं की प्रभावकारिता का मानसिक स्वास्थ्य के साथ सकारात्मक सम्बन्ध होता है साथ ही लड़कों का मानसिक स्वास्थ्य, संवेगात्मक बुद्धि और स्वयं की प्रभावकारिता लड़कियों की तुलना में अच्छी पाई गई। विज्ञान और कला विषय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, मानसिक स्वास्थ्य और स्वयं की प्रभावकारिता में कोई अंतर नहीं पाया गया।

कुमार, अजय एण्ड पाटिल, बी. (2011) द्वारा ''इमोशनल इंटेलीजेंस काम्पीटेन्सीज ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू देअर क्वालिफिकेशनस एण्ड स्ट्रीम ऑफ टीचिंग'' विषय पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि योग्यता और उनकी योग्यता तथा शिक्षण प्रभावशीलता के सम्बन्धों की तुलना करना था। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि और उनकी योग्यता, प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

श्रीनिवासन, बी. एण्ड रेड्डी, बी.एस.कुमार (2011) द्वारा ''टीचर्स इफेक्टीवनेस इन रिलेशन टू मेन्टल हेल्थ, स्ट्रेस एण्ड इमोशनल इनटेलीजेंस'' विषय पर शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य हाईस्कूल के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और दबाव का शिक्षकों की प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन करना था। अध्ययन के निम्नानुसार निष्कर्ष पाये गये–(1) शिक्षकों की प्रभावशीलता पर मानसिक स्वास्थ का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। (2) शिक्षकों की प्रभावशीलता पर दबाव का सार्थक प्रभाव पड़ता है। (3) संवेगात्मक बुद्धि का शिक्षकों की प्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। (4) शिक्षकों की प्रभावशीलता पर संवेगात्मक बुद्धि और दबाव का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

पासी, सुमित एण्ड देशपांडे, सुनील (2012) द्वारा ''प्री मेडीकल टेस्ट (पी.एम.टी.) एवं प्री इंजीनियरिंग टेस्ट (पी.ई.टी.) परीक्षा देने वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि स्तर का अध्ययन'' विषय पर शोध अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व सामंजस्य और संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्धों को ज्ञात करना था। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष में पाया कि जिन शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है वे आसानी से गृह पर्यावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेते है। लेकिन इनके मध्य सामाजिक, सांवेगिक और स्वास्थ्य सामंजस्य में सार्थक अंतर पाया गया।

मोहम्मद, महमूद आलम (2012) द्वारा ''इमोशनल इंटेलीजेंस एफीसेंसी एण्ड कैरियर मैच्योरिटी अमंग द स्टूडेन्ट्स ऑफ हैदराबाद सिटी'' विषय पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में किशोरों की स्वयं की कार्यकुशलता, वृत्तिक परिपक्वता और संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्धों को ज्ञात किया गया है। इस अध्ययन में निम्नानुसार निष्कर्ष प्राप्त हुए– (1) किशोरों की वृत्तिक परिपक्वता, संवेगात्मक बुद्धि और स्वयं की कार्यकुशलता के मध्य सार्थक संबंध पाया गया। (2) सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों और पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की वृत्तिक, संवेगात्मक बुद्धि और स्वयं की कार्यकुशलता उच्च पाई गई।

निष्कर्ष :– यदि हम अपने समाज की परिस्थितियों को विश्लेषणात्मक रूप से अवलोकन करें, तो हमें अपने

समाज में उत्पन्न होने वाली कई समस्याओं के मूल कारणों को जानना होगा। लोग अपनी अनमोल चीजें खो रहे हैं, जिसे मानसिक शान्ति कहा जाता है। खुशी, जो संतुष्टि की भावना से आती है। परिवारों में हम देख सकते हैं कि कुछ बच्चे अपने माता–पिता द्वारा डाटे जाने पर तुरन्त प्रतिक्रिया देतें हैं और जल्द ही क्रोधित हो जाते है, इसकी वजह से अवसादग्रस्त हो जाते है। जिसका परिणाम होता है–असंतुलित व्यवहार।

दुर्भाग्यवश हमारे विलासितापूर्ण जीवन में कोई संतुष्टि नहीं है, क्योंकि हम हमेशा कुछ पाने की आकांक्षा की स्थितियों में रहते है। वर्तमान में हमारी आवश्यकता की सीमा जरूरत से ज्यादा हो गयी है। ये चीजें हमें शान्तिहीन बनाती हैं और हम हमेशा भौतिकवादी चीजो के माध्यम से खुशी पाने की बार–बार कोशिश करते है। लेकिन यह हमारा भ्रम है। क्योंकि सांसारिक चीजो से वास्तविक खुशी प्राप्त नहीं की जा सकती। विद्यार्थियों के विकास के लिए यह आवश्यक है कि उनकी क्षमता एवं बुद्धि को विकसित करने की आवश्कता है और यह भावनाओं को प्रबंधित करके किया जा सकता है। संवेगात्मक बुद्धि सामाजिक समायोजन को प्रबंधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची (References) :-

- कुमारी, मिस रजनी एवं राधाकान्त गर्तिया (2012), ”रिलेशनशिप बिटवीन स्ट्रेस एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स, एशियन जनरल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च, वॉल्यूम नं0 01 (3)
- कुमार, अजय एंड पाटिल,बी. (2011) ”इमोशनल इंटेलीजेंस कम्पीटेंसीज आफ सेकेंडरी स्कूल टीचर इन रिलेशन टू देअर क्वालीफिकेशन एमंग स्ट्रीम ऑफ टीचिंग” रिसर्च पेपर, जनरल ऑफ साइकोलिंगुआ, वॉल्यूम (1) पृष्ठ 103–116
- कौल, लोकेश (2007) : शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, द्वितीय पुनर्मुद्रण, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, दिल्ली
- गुप्ता, गरिमा एंड सुशील,कुमार (2010),”मेंटल हेल्थ इं रिलेशन टू इमोशनल इंटेलीजेंस एंड सेल्फ एफिकेसी अमंग कालेज स्टूडेंट्स” रिसर्च पेपर, जनरल ऑफ सैकोलिंगुआ, वाल्यूम (2) पृष्ठ175–179
- गैरेट,ई. हेनरी (2014) : शिक्षा और मनोविज्ञान में साँख्यिकीय के प्रयोग, कल्याणी, नई दिल्ली
- जोहर, डी. एण्ड मार्शल (2000). आई. एस. क्यू. : स्पिरिचुअल इंटेलिजेंसः द अल्टीमेट इंटेलीजेंस, लंदन, रूब्लूम्सबरी.
- तोमर, ऋचा (2010),”उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विधार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन” एम.एड. डिजर्टेशन एब्ट्रेक्ट, पृष्ठ 50–59
- पासी,सुमित एंड देशपांडे, सुनील (2012),”प्री मेडिकल टेस्ट (पी.एम.टी.) एवं प्री इंजीनियरिंग टेस्ट (पी.ई.टी.)परीक्षा देने वाले छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि स्तर का अध्ययन” रिसर्च, जनरल रिसर्च हंट, वॉल्यूम (1) पृष्ठ 175–179
- बत्रा दीनानाथ (2017), भारतीय शिक्षा का स्वरूप. प्रभात प्रकाशन. दिल्ली. पृष्ठ सं0 63 – 68
- बुच, एम.बी. (1988–92) : फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली
- बुच, एम.बी. (1993–2000) : सिक्स्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च,एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली
- ब्रेहमैन, एंड बर्च्दे (2007),”इमोशनल इंटेलीजेंस, कम्पेरिंग साइंस एंड आर्ट्स स्टूडेंट्स” रिसर्च पेपर, जनरल आफ साइकोलिंगुआ, वॉल्यूम 09(2) पृष्ठ 105–111
- भावलकर, स्मिता एण्ड अमलर्नेकर, स्वाती (2018), इमोशनल इंटेलीजेंस : पिवोट इन एडोलसेंस. एजुट्रैक सितम्बर वॉल्यूम 18 नं0 1 पृष्ठ सं0 15–17
- मंगल, एस.के. (2010) : शिक्षा मनोविज्ञान, तृतीय संस्करण, पी0 एच0 आई0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- मिश्रा, के.एस. एवं अन्य, (2012). कॉग्निटिव एण्ड ऑफेक्टिव कोरिलेट ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस. अनुभव पब्लिकेशन हाऊस इलाहाबाद, पृष्ठ 7 – 15
- मोहम्मद, महमूद आलम (2012),”इमोशनल इंटेलीजेंस एफिसेंसी एण्ड कैरियर मैच्योरिटी अमंग द स्टूडेंट्स आफ हैदराबाद सिटी ”जनरल आफ कम्युनिटी गाइडेंस एण्ड रिसर्च, वॉल्यूम 09(2) पृष्ट 179–182
- यादव, पी.एन. (2013),”इमोशनल इन्टेलीजेंस एण्ड वैल्यूज ऑफ एडोलोसेन्ट्स स्टडीइंग इन गवर्नमेंट स्कूल्स, रिसर्च पेपर जनरल एजुट्रेक्स, वाल्यूम (12) पृष्ठ 165–171

- राइस, डी. एम. (2007),"एन एक्जामिनेशन ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस : इट्स रिलेशनशिप टू एकेडमिक अचीवमेंट इं आर्मी जे.आर.ओ.टी.सी. एंड द इम्पलिकेशन फॉर एडुकेशन" रिसर्च पेपर, जनरल ऑफ सैकोलिंगुआ, वॉल्यूम 11(2) पृष्ठ 175–179
- लेविन, एम (2014). स्पिरिचुअल इंटेलिजेंस, अवेकनिंग द पावर ऑफ योर स्पिरिचुअलिटी एंड इटुइशन, लंदन : होड्डेर – स्टौघ्टन.
- शर्मा, पी.डी. (2018), एथिक्स सत्यनिष्ठ एवं अभिवृत्ति केस अध्ययन सहित. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ ठ सं0 78 – 105
- सिम्पकिंस, क्लाइव (2004). स्पिरिचुअल इंटेलीजेंस डेफिनेशन, माइंडवाइज वेब साइट, ऑनलाइन, एवेलेबल फ्रॉम.
- सिंह, दलीप (2015), कार्यस्थल पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक प्रोफशनल गॉइड सेज पब्लिकेशन इण्डिया पृष्ठ 35 – 40
- श्रीनिवासन, बी. एंड रेड्डी, बी. एस. कुमार (2011),"टीचर इफेक्टिवनेस इन रिलेशन टू मेंटल हेल्थ, स्ट्रेस एंड इमोशनल इंटेलिजेंस" रिसर्च पेपर, जनरल एजुट्रैक्स, वॉल्यूम (2) पृष्ठ 160–167